दिल में तू ही तू...

-ब्र.कु. दिलीप राजकुले,शांतिवन

प्राय: आपने देखा है कि हनुमान जी के दिल में सीता व राम को दिखाते हैं। क्या यह संभव है? किसी के शारीरिक हृदय में कोई ऐसे विराजित हो सकता है! या यह कोई काल्पनिक चित्र है जिसे हमने वास्तविकता का नाम दिया है! देवी देवताओं का वास या निवास प्राय: यजमान या पुजारी या श्रद्धालु के भावों में देखने को मिलता है। शरीर के किसी भी अंग में देवी देवताओं का वास नहीं होता परंतु बुद्धि रूपी दिल में किसी का भी वास हो सकता है। अपनी स्मृति पटल पर जिसकी भी आप छवि बना लो वह मन में बसने लगेगा। हनुमान जी ने भी अपनी स्मृति पटल पर सीता व राम की छवि बना ली थी और बुद्धि रूपी दिल में अपनी निश्छल भावनाओं के अंदर समाकर रखा था।

अब यह संभव है कि कोई भी आपके दिल में समा सकता है बशर्ते आप का दिल साफ हो। कहते हैं कि दिल साफ है तो मुराद हासिल है। कोई इंसान नहीं होगा जो यह न कहता हो कि मेरे दिल में यह बात थी, है या रहेगी। अच्छी, साधारण, बुरी या जो भी भावनायें उत्पन्न होती हैं वह दिल में छप जाती हैं। दिलवाला परमपिता परमात्मा की याद ही संस्कारों में दिव्यता लाती है और दिल साफ, पवित्र करती है।

दरअसल यह युग ही दिल मिलने का युग है जिसे संगमयुग कहते है। भारतवर्ष में संगम के अनेक उदाहरण पाये जाते हैं जैसे कि नदियों का संगम, ऋतुओं का संगम आदि। यह वेला परमात्म प्यार पाने व ईश्वरीय प्यार देने की वेला है। खुद खुदा परवरदिगार रूहों से मोहब्बत कर रहे हैं। वे कह रहे हैं कि मेरी लाडली संतानों तुम मेरे दिल में हो। जब स्वयं ईश्वर यह शब्द कह दे कि तुम मेरे दिल में हो तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं, पाना था सो पा लिया और कुछ बाकी नहीं यह गीत दिल गाता है। परमात्मा शिव से दिल लगाने से मनुष्यात्मा संतुष्ट हो जाती है। जो आत्मा संतुष्ट हो जाती है वह सम्बन्ध सम्पर्क में भी सन्तुष्टता की लहर फैलाती है। जब दिल ईश्वर से लग जाती है तो मानव सृष्टि का बीज स्वयं ईश्वर होने के कारण मानुष्यों के इस वटवृक्ष को आत्मा व परमात्मा के स्नेह का पानी मिल जाता है और यह कलियुगी सृष्टि से सतयुगी सृष्टि में परिवर्तन होने लगता है। आपस में भाईचारे व प्रेम, शान्ति, आनंद, पवित्रता की भावना फैलने लगती है। जिसने भी ईश्वर से दिल लगाया है, उन्हें परीक्षाओं का सामना न करना पड़ा हो ऐसा नहीं हुआ है। क्योंकि ईश्वर को जानना, उसे पहचानना सबके वश में नहीं होता। जैसे कि श्री कृष्ण में मीराबाई की दिल लग गयी जिससे वो ऐश्वर्य को छोड़कर वैरागी बन गयी। वैसे ईश्वर से दिल लगाने से संसार को त्यागना नहीं परंतु संसार को तारना है। जैसे पानी के बीच नांव तैरती है, कीचड़ के अंदर कमल खिलता है।

अत: यह युग ही प्रभु मिलन, ईश्वर से दिल लगाने का पवित्र संगमयुग है। इसमें जितना ईश्वर से दिल लग गई उतनी ज़िंदगी संवर गई। इसलिए हे प्यारी आत्माओं!आत्मा और परमात्मा के बीच प्रेम के ढ़ाई अक्षर पढ़ना भी आवश्यक है। हाँ,भाषा के अक्षर पढ़ना भी ज़रूरी है परन्तु एक अच्छा नागरिक अथवा एक अच्छा मनुष्य बनने की विद्या व ईश्वरीय ज्ञान को पढ़ना उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है। जहाँ अहंकार व अशुद्ध भावनायें हों उस सम्बन्ध में कभी भी नि:स्वार्थ दिल का प्रेम पनप नहीं सकता। आज के समय में हरेक को दिल का नि:स्वार्थ प्रेम चाहिए चाहे वह बच्चा हो या बुज़ुर्ग। यदि कोई सच्चे दिल से उन्हें प्यार करता है तो उन्हें अच्छा लगता है। जहाँ विचारों व भावनाओं में शुद्धि होती है वहाँ दिल का सच्चा प्यार होता है। विचारों व भावनाओं में शुद्धता परमपिता परमात्मा से दिल लगाने से होती है। जैसे श्री हनुमान जी व मीराबाई ने अपने दिल में प्रभु को बसाया। प्रभु ने भी अपने दिल में इन्हें बसाया।

तो आइए अपने दिल को स्वच्छ व साफ बनायें और इतना साफ बनायें कि परमात्मा जैसी परमशक्ति उसके अंदर समा सके। आप खुद ही सोचो कि यदि आपके दिल में कोई बैठा हो और आप ऊपर से किचड़ा डालें तो कैसा लगेगा? इसीलिए ही हम सबके पिता परमात्मा जिसे हम दिलाराम भी कहते हैं वो कहता है कि अगर मुझे अपने दिल में बिठा रखा है तो कोई भी व्यर्थ, परचिंतन, ईर्ष्या, नफरत का किचड़ा मत डालना। तभी मैं आपके साथ हमेशा रहूँगा।

शरीर के किसी भी अंग में देवी देवताओं का वास नहीं होता परंतु बुद्धि रूपी दिल में किसी का भी वास हो सकता है, अपनी स्मृति पटल पर जिसकी भी आप छवि बना लो वह मन में बसने लगेगा। हनुमान जी ने भी अपनी स्मृति पटल पर सीता व राम की छवि बना ली थी और बुद्धि रूपी दिल में अपनी निश्चल भावनाओं के अंदर समाकर रखा था।

राँची-झारखण्ड। विश्व योग दिवस पर राजभवन के बिरसामंडप सभागार में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम द्रौपदी मुरमू। साथ हैं ब्र.कु. निर्मला।

नेपाल-फत्तेपुर। नेपाल सरकार के खेलकूद तथा विकास मंत्री सत्यनारायण मंडल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीरा।

उदयपुर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जिला सैनिक कल्याण कार्यालय व ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में योग की अनुभूति कराते हुए ब्र.कु. राजेन्द्र मनसुखानी। साथ हैं ब्र.कु. रीटा।

मथुरा-उ.प्र.। मथुरा डिपो के अधिकारियों के लिए त्रिदिवसीय स्ट्रेस मैनेजमेंट विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. मधु, विजय बदौत,सीनियर मैनेजर,मथुरा डिपो, संदीप जैन, ऑपरेशन मैनेजर,मथुरा डिपो, आशीष जी,कॉपरिट ट्रेनर व अन्य।

नारनौंद-हरियाणा। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. बिन्दु, ब्र.कु. राजेश, एस.डी.ओ. डॉ. वजीर, ए.डी.ओ. डॉ. कृष्ण व अन्य।

माउण्ट आबू। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर पोलो ग्राउंड में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सांसद देवजी पटेल, अनुसूचित जनजाति आयोग के उपाध्यक्ष विकेश खोलिया, ब्र.कु. शशि व अन्य।

रामपुर-मनिहारान-उ.प्र.। नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी कृष्ण कुमार भडाना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रानी। साथ हैं ब्र.कु. संतोष व अन्य ब्र.कु. बहनें।

सुन्दर नगर-हि.प्र.। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार अदीप सोनी, हि.प्र. के संसदीय सचिव सोहन लाल ठाकुर, ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. सुषमा, ब्र.कु. शिखा, ब्र.कु. मंजरी, ब्र.कु. दया व अन्य।

मोतिहारी-बिहार। सुदूर गांव देवापुर पत्ताही में दो दिवसीय 'आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं तनाव मुक्त जीवन' विषय पर सेमिनार में उपस्थित हैं ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. विभा, ब्र.कु.अशोक वर्मा, ब्र.कु.धनंजय किशोर, अधिवक्ता,दूर संचार कर्मी व ब्र.कु. हरिशंकर।